बिहार पुलिस अकादमी

बिहार पुलिस

BIHAR POLICE ACADEMY
RAJGIR

बढ़ते कदम

मासिक पत्रिका
(मार्च 2025 अंक)

The Cultural Night...

INDEX:

Content	Page No.
• बदलती जलवायु में स्वच्छ जीवन का अधिकार और बिहार पुलिस अकादमी का सतत प्रयास	04
• कैद परिंदा (कविता)	05
• खुदगर्ज इंसान (कविता)	05
• Fear or Faith? Rebuilding Trust Between Police and Public	06
• हूँ कौन मैं? (कविता)	07
• हमारा बीपीए...(कविता)	07
• अपेक्षाओं की चुप्पी, आत्मा की पुकार	08
• जीवन.... (कविता)	09
• वो जो, अबद तक साथ चले...	09
• Professionalism and Public Pressure in Policing	10
• My Holi Deputation in Gaya	11
• One Day Workshop on NDPS Act, 1985	13
• सामुदायिक पुलिसिंग: वर्दी से परे, विश्वास की स्थापना	14
• Few snaps by our probationers	15
• Few Snaps from the Cultural Night:	16

From The Editorial Desk:

Welcome to the **March 2025** issue of **"बढ़ते कदम"**, the monthly magazine from the Bihar Police Academy, Rajgir. This edition offers a diverse range of articles and insights reflecting the multifaceted nature of modern policing and the vibrant life within the academy.

We begin with an encouraging piece titled **"बदलती जलवायु में स्वच्छ जीवन का अधिकार और बिहार पुलिस अकादमी का सतत प्रयास"**. This article delves into the realities of climate change and its impact on mother earth. We have also delved deep into **Rebuilding Trust Between Police and Public.**

One article describes the knowledge gained form the **One Day Workshop on the NDPS Act, 1985** that was conducted in the Bapu Sabhagaar, Patna.

Beyond the core aspects of policing and technology, this edition also captures the beauty of the Bihar Police Academy campus as well as the **Cultural Night** that took place in the month of March in the campus.. Our sections on *"Few snaps from the cultural night"* offers a deep dive into a few of the amazing performances by our probationers on the eve of the cultural night.

We hope this issue of "बढ़ते कदम" provides valuable insights and keeps you informed about the latest developments in policing, technology, and the life within the Bihar Police Academy. We encourage you to engage with the content and give your valuable feedback in our journey of learning and growth...

बदलती जलवायु में स्वच्छ जीवन का अधिकार और बिहार पुलिस अकादमी का सतत प्रयास

संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन फ्रेमवर्क की पाँचवीं रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है कि वैश्विक तापमान 2100 ई. तक 2 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ सकता है। इस बदलाव का प्रभाव आज विश्व के लगभग सभी क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से देखा जा रहा है। विस्थापन, बेरोजगारी, कार्य के घंटों में कमी, संक्रामक रोगों का बढ़ना और जीवन प्रत्याशा में गिरावट जैसी समस्याएँ सामने आ रही हैं। ऐसे में **"स्वच्छ जीवन का अधिकार"** को मानवाधिकार के दायरे में समाहित करना समय की माँग है।

हाल ही में भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने अनुच्छेद 14 और अनुच्छेद 21 का हवाला देते हुए कहा कि जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों से मुक्त जीवन जीने का अधिकार प्रत्येक नागरिक को प्राप्त है। इस दिशा में भारत सरकार और बिहार सरकार विभिन्न योजनाओं और प्रयासों के माध्यम से कार्यरत हैं। ऐसे में बिहार पुलिस अकादमी, राजगीर भी इस प्रयास में पीछे नहीं है।

हरित पहल की दिशा में सार्थक कदम

स्वच्छ जीवन के लिए हरित वातावरण, स्वच्छ ऊर्जा, पोषणयुक्त फसलें, और आधुनिक तकनीक आवश्यक हैं। बिहार सरकार द्वारा वर्ष 2070 तक **"शून्य कार्बन उत्सर्जन"** का लक्ष्य निर्धारित किया गया है, जिसे साकार करने हेतु सात निश्चय योजना, जल-जीवन-हरियाली योजना, हर परिसर–हरा परिसर अभियान और जागरूकता कार्यक्रम जैसे कदम उठाए जा रहे हैं। बिहार पुलिस अकादमी भी इसमें अपनी दृढ़ प्रतिबद्धता के साथ भागीदारी निभा रही है।

109 एकड़ क्षेत्र में फैली इस अकादमी के प्रत्येक कोने को हरित बनाने का कार्य वृक्षारोपण के माध्यम से किया गया है। चाहे वह प्रशासनिक निदेशक महोदय का कार्यालय हो, प्रशिक्षुओं के आवासीय क्षेत्र हों या अन्य अधिकारीगण के परिसर – हर स्थान को सजावटी और पर्यावरणीय दृष्टि से उपयोगी पौधों एवं झाड़ियों से स्वच्छ और सुंदर बनाया गया है। यह हरियाली न केवल अकादमी की सुंदरता को बढ़ाती है, बल्कि प्रशिक्षुओं में नई ऊर्जा भी भरती है।

स्वच्छ ऊर्जा और जैविक कृषि की ओर

स्वच्छ जीवन के अधिकार में स्वच्छ ऊर्जा, स्वच्छ पेयजल और प्राकृतिक खेती का विशेष महत्व है। निदेशक महोदय और समस्त सहकर्मियों के सामूहिक प्रयास से अकादमी के सभी भवनों – चाहे वह आवासीय हों, कक्षाएँ हों या कार्यालय – की छतों पर सौर पैनल स्थापित किए गए हैं, जिससे पर्यावरण-अनुकूल विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित की जा रही है।

इसके अतिरिक्त, अपशिष्ट पदार्थों के माध्यम से सूक्ष्म स्तर पर बायोगैस का भी उत्पादन किया जा रहा है। बढ़ती खाद्य माँग और जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों के मद्देनज़र, अकादमी में जैविक खेती को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। प्रशिक्षकों, अनुदेशकों और जीविका दीदियों के सहयोग से दैनिक उपभोग योग्य सब्जियों का उत्पादन पूरी तरह प्राकृतिक और जैविक विधियों से किया जा रहा है। महिला अधिकारीगण भी रूफटॉप गार्डनिंग के ज़रिए इस मुहिम में योगदान दे रही हैं।

प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और भविष्य की दिशा

ऊर्जा की बचत, खाद्य अपव्यय में कमी, और जल संरक्षण को लेकर अकादमी नियमित रूप से दिशानिर्देश जारी करती है, जिन्हें प्रशिक्षु और अन्य सदस्य अपने जीवनशैली में आत्मसात कर रहे हैं।

अब आवश्यकता है कि खाली पड़ी ज़मीनों पर और अधिक वृक्ष लगाए जाएँ, तालाबों पर सोलर पैनल लगाकर जल स्रोतों का भी सतत उपयोग किया जाए, और अपशिष्ट प्रबंधन को अधिक प्रभावी बनाकर बायोगैस उत्पादन को बढ़ाया जाए ताकि बिहार राज्य **"नेट ज़ीरो कार्बन"** लक्ष्य की प्राप्ति की ओर तेजी से बढ़ सके।

यद्यपि ये प्रयास सूक्ष्म स्तर पर हैं, लेकिन इनका उद्देश्य बड़ा और प्रेरणादायी है। बिहार पुलिस अकादमी का यह योगदान न केवल पर्यावरणीय चेतना का प्रतीक है, बल्कि यह अन्य संस्थाओं और विभागों के लिए भी एक आदर्श मार्गदर्शक बन सकता है।

प्र0 पु0 अ0 नि0
बैच-976
कम्पनी–J

कैद परिंदा

घोसलों से निकल कर, एक अरमान के लिए,
आसमान में लम्बी उड़ान के लिए।
विफलताओं से नई सीख लिए,
लड़ रही हूँ अपनी पहचान के लिए।

हर राह काँटों से सजाई,
नभ में अलग पहचान के लिए।
अडिग होकर मेहनत करता जा,
बाज जैसी ऊँची उड़ान के लिए।

मेहनत की पूँजी बाँधें कंधे पर,
हर दिन एक नई उड़ान के लिए।
पाना है मंजिल को एक दिन,
समाज में अपने आत्मसम्मान के लिए।

क्यों रोक रखा है क्षणिक कुंठाओं से,
जब पाना है मंजिल नई पहचान के लिए।
तोड़ दे सारी जंजीरों को अपनी कलम से,
खुद की एक अलग पहचान के लिए।

खुदगर्ज इंसान

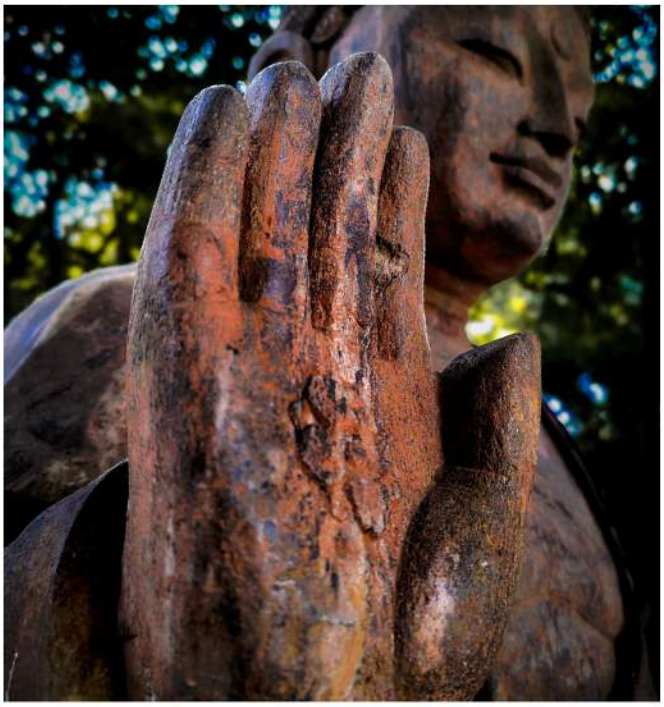

ये जनमानस पर छाया है,
विवेक पर छायी माया है।
इंसानियत की मोल कहाँ,
अपनी झोल भर रहे लोग यहाँ।

भाग रहें हैं सब ऐसी प्रतिस्पर्धा में,
मानों मृगतृष्णा की खोज हो मरूस्थल में।
छूट रही भाईचारे की डोर जहाँ,
साथ लिए हैं हैवानियत की डोर यहाँ।

जन्म-मरण के बीच में फंसे हैं सब नर,
क्षणिक खुशी पर भार रहे, जैसे नदी में जलचर।
मिलता नही सात्विक हर्ष जन को यहाँ,
खुद को हर पल रखते, मिथ्या में लोग यहाँ।

पल भर के सम्मान में, पाल लेते है मिथ्या की पुँज,
बाँध रहे हैं मनुज, यहाँ कुमति के कुँज।
दूर होते जा रहे खुद से, सब लोग जहाँ,
इंसानियत को भूल कर, भाग रहे लोग यहाँ।

सोनल कुमारी
कम्पनी-जी
चेस्ट नं0-690

Fear or Faith?
Rebuilding Trust Between Police and Public

In many parts of India, and particularly in states like Bihar, the police-citizen relationship is characterized primarily by fear, not trust. Even in uniforms designed to signal safety and service, the uniform is instead taken by many as a symbol of control and intimidation. The perception, that has been built up over generations has the men of law enforcement not being held accountable and lack of public knowledge of the policing in general.

Such hesitance to go to the police usually emanates from fear of delays, harassment, and repetition of the violence already suffered. And for marginalized communities, this fear already has been heightened by decades of over-policing and discrimination. The chasm grows even wider when citizens don't know what their rights are or what the proper procedures should be; they're then susceptible to misinformation and mistrust.

To do so, police themselves must change. Policing needs to be superseded by training in empathy, communication and transparency, to accompany traditional enforcement. Police officers are meant to be seen as more than just the enforcers of the law, they are meant to be seen as leaders in their communities and encourage others to better themselves and gain respect for one another.

Technology also plays a role. Digital mediums, such as complaint portals, public WhatsApp groups and feedback systems, provide a secure and convenient avenue for citizens to reach police. This fosters accountability as well as removing communication barriers.

It takes real, sustained work to rebuild the public's trust. It all adds up, the respectful gestures. Building a future in which the police are seen as partners — not threats — will require both institutional change and active public engagement. Instead of dread, the badge should instill trust — in justice, in dignity, in service.

Seema Kumari
Chest No. 369
Coy - D
PSI, 2023 Batch

हूँ कौन मैं?

समय रथ पर सवार हो सोचता,
हूँ, कौन मै ?
राहगीर हूँ या हूँ सफर
मंजिल हूँ या बस डगर
हूँ, कौन मै ?
आत्मा हूँ, या स्वयं ब्रहम,
या बस मांस का चिथड़ा
हूँ, कौन मै ?
अनंत हूँ, या नश्वर
आजाद हूँ कि कैद हूँ
हूँ, कौन मै ?
सत्य हूँ, असत्य हूँ
या सिर्फ प्रपंच हूँ
हूँ, कौन मै ?
प्रकाश हूँ या धूप अंधेरा
सांझ हूँ ?
या मूर्ख सवेरा
हूँ, कौन मै ?
रथ हूँ सवार हूँ
या हूँ स्वयं मैं सारथी
हूँ, कौन मै ?
बंदर हूँ या हूँ कलंदर
कठपुतली हूँ या कलाकार
है किसके हाथों में डोर
हूँ, कौन मै ?

सत्य प्रकाश
प्र0पु0अ0नि0
कम्पनी - I, चेस्ट नं0-894

हमारा बीपीए...

प्रकृति की गोद में बसा एक अनुशासित संसार, बीपीए
हरियाली ओढ़े ज़मीन मुस्करा रही है,
जिसमें बसा एक अनुशासित संसार जगमगा रहा है।
पहाड़ियों से घिरा एक ख़्वाब है, बीपीए,
प्रकृति की गोद में बसा एक अनुशासित संसार है बीपीए।
नीला गगन, दूर पहाड़ों की पंक्तियाँ हैं,
और बीच में तिरंगा–वीरता की अभिव्यक्तियाँ हैं।
पेड़ों की कतारें, सजीव अनुशासन हैं,
हर कोना बयाँ करता समर्पण का वचन है।
बीपीए की सुबह है, जैसे एक प्रेरणा की घड़ी,
जहाँ हर नवजवान रचता है अपनी वीरता की कड़ी।
प्रशिक्षण की भूमि है यह, प्रकृति की गोद में,
हर क़दम पर अनुशासन, हर साँस देशभक्ति की सोच में।
पक्षियों की बोली, वातावरण की ख़ूबसूरती,
यहाँ खिले फूलों की कण–कण से आती ख़ुशबू।
यह कोई आम बग़ीचा नहीं, यह है धरती वीरों की,
जहाँ हर साँस में बसी है कहानी शौर्य और रीतों की।
जहाँ सिर्फ़ हथियार नहीं, आत्मबल की बात है,
प्राकृतिक सौंदर्य में वीरता की बात है।
पहाड़ियों से घिरा एक ख़्वाब है बीपीए,
प्रकृति की गोद में बसा अनुशासित संसार है, बीपीए।

ज़ेबा परवीन
प्र0पु0अ0नि0
अकादमी क्रमांक-, कम्पनी-

अपेक्षाओं की चुप्पी, आत्मा की पुकार

अपेक्षाएं मनुष्य को खा जाती हैं,और मानवताओं से दूर ले जाती हैं। अपेक्षाएं और तृष्णा दोनों चाहत ही हैं, कई लोग इन्हें समानार्थी मानते हैं परन्तु मैं इससे कतई इत्तेफाक नहीं रखता हूँ। वास्तव में अपेक्षाएं आप किससे कर रहे होते हैं, जिससे आप जुड़े होते हैं—एक दोस्त, पत्नी, परिवार, समाज से अपेक्षाएं अपेक्षित हो सकती हैं, जबकि तृष्णा व्यक्तिनिष्ठ होती है, इसका इन सब से कोई लेना-देना नहीं है। वास्तव में तृष्णा एक भूख है, जिसने सदैव मानव को बेचैन किया है, और अपेक्षा के मुकाबले ज्यादा बलवती है। मैं तो सारी समस्याओं का मूल इसे ही मानता हूँ।

सामान्य मानव जो बुद्धत्व से दूर खड़ा है, उसे बेचैन करने में अपेक्षाएं भी कोई कसर नहीं छोड़तीं। मैंने कई माता-पिता को जीवन में अपने औलाद से आहत होते देखा और सुना भी है। उन्होंने उसे बड़ी ही शिद्दत से पालन-पोषण किया और अपना पूरा जीवन उन संतानों के परिष्करण में लगाया। इस दौरान उनकी अपेक्षाएं परत-दर-परत बढ़ती गईं। आज कई संपन्न माता-पिता जिनके पास सारी अकूत संपत्ति होने के बाद भी अपेक्षा के कारण दुःखी हैं।

आजकल कई प्रेमी युगलों में संबंध विच्छेद का मुख्य कारण अपेक्षाएं ही हैं। ज्यादा अपेक्षाएं मानवीय संवेदना को क्षीण कर देती हैं और मानव को अपूर्ण बनाती हैं। क्या व्यक्ति खुद को पूर्ण नहीं कर सकता है? कई महामानवों ने उसी पूर्णता को हासिल कर स्वयं को दुःख के सागर से निकाला।

जब आप अपेक्षा पालेंगे, तब तो यह अपेक्षा आपको अपूर्ण बनाएगी, आपके सुख-दुःख का निर्धारण बाह्य शक्तियों के द्वारा होगा। ईश्वर ने व्यक्ति को आँख, नाक, कान जैसी ज्ञानेन्द्रियाँ दीं, जो रूप, मोह, गंध आदि के प्रति आकर्षित होती हैं, जो मानवीय दुःख के मुख्य कारण हैं। कई सदियों से यह भारतीय दर्शन के केन्द्रबिन्दु रहे हैं और यही निष्कर्ष निकाला गया कि जिन्होंने इन इंद्रियों—रूप, मोह, गंध, लोभ इत्यादि—पर विजय पा ली, वह पूर्ण हो जाता है। न तो उसे सुख से खुशी होती है और न ही दुःख से दुःखी।

प्र0पु0अ0नि0-अनुप कुमार
चेस्ट नं0-266,
कम्पनी - C

कुछ रचनाएं.....

जीवन....

जीवन की यह प्रथम किरण है,
सागर की अविरल लहरों पर।
आनंद है अनगिनत लहरों का,
उद्भव है जीवन लहरों का।
संयम रख सद्भाव बना,
जीवनरूपी सागर पर।
है अनन्त असीम आशाएं
देश समाज और धरा की।
सागर की गहराई बन,
प्रथम किरण की नई आशाएं।
उठो जागो और चलो तुम,
पहुँचो मंजिल की ओर।
जीवन की यह प्रथम किरण है,
सागर की अविरल लहरों पर।
आनंद है अनगिनत लहरों का,
उद्भव है जीवन लहरों का।

अनुराधा सहाय
प्र.पु.अ.नि.
अका. क्र0-89, कम्पनी- A

वो जो,
अबद तक साथ चले...

कहने को तो कारवां साथ था,
पर खैरियत- ए- हाल पूछने वाले कम मिले।

एक हम थे वफा- ए- मोहब्बत लुटाने वाले,
दूसरे को जीतने मिले कम मिले।

आबाद कर दिया उसे, आब- ए- चश्म ने मेरे,
खुद हो गए- गुमराह, गुमनाम , गर्द- ए
-खाक मिले।

अब इंतज़ार है बस अपने ग़म-ख़्वार का,
मिट्टी की दुनिया में ऐसा खिलौना मिले, जो
अबद् तक साथ चले।

~

विकाश कुमार
परि० जिला समादेष्टा
68th batch
Ch,No-10

The Silent Test of Duty: Navigating Professionalism and Public Pressure in Policing

Balancing Law and Expectation in Modern India:
In a country as large and diverse as India, policing is not just about enforcing laws—it is about carrying the weight of people's expectations while standing firmly on the foundation of fairness. Officers on duty often find themselves walking a fine line: between what is right and what is popular, between their training and the rising voices of public emotion.

Public Outcry and Real-Time Judgments
Recent years have thrown up several moments when this tightrope walk became a national spectacle. During the Hathras case in 2020, the tragic death of a young Dalit woman sparked nationwide outrage. Protests erupted, political fault lines deepened, and the police came under scrutiny. Accusations of delay and mishandling flooded headlines. In this storm, the question was never just about enforcement—it was about judgment, restraint, and the ability to act beyond pressure.

In 2023, the ethnic clashes in Manipur presented yet another daunting challenge. The state was gripped by violence, and communities stood divided. Allegations of inaction, bias, and selective enforcement flooded public discourse. Officers on the ground faced impossible choices: who to protect, how to intervene, and whether they could do so without being seen as partisan. This was not just a law-and-order problem—it was a test of the police force's moral compass.

The Role of Media and Politics
With over 800 television news channels and millions of active social media users, every police action today is recorded, judged, and debated instantly. While this level of scrutiny is part of a vibrant democracy, it also creates a storm of expectations that may not always align with facts. The pressure to act swiftly, and visibly, often comes at the cost of due process. The problem deepens when politics enters the frame. Officers are expected to be neutral, but political narratives can cloud the public's perception of neutrality. In such situations, professionalism becomes a form of quiet resistance. It is a refusal to bow down to agendas. It is the courage to let truth unfold at its own pace.

Examples of Steady Leadership
Some officers have shown that this balance is possible. During the Shaheen Bagh protests in 2020, a DCP's calm engagement with protestors drew appreciation. He didn't suppress voices, nor did he ignore protocol. He listened, de-escalated, and acted when required—proving that firmness and empathy can coexist.

Towards Trust-Building and Reform
Professionalism in policing is not about appearing rigid or unfeeling. It's about being steady when emotions run high. It's about knowing that justice is not a sprint, but a marathon. And most importantly, it's about earning respect—not from fear, but from consistency.
India has over 20 lakh police personnel, and yet the police-to-population ratio (158 per lakh) remains below the UN-recommended standard. With this human resource stretched, building trust through professionalism, rather than reactionary policing, is essential.

Conclusion: Professionalism is Silent Strength
As citizens, we often look for quick answers. But quickness and justice rarely go hand in hand. Let us value the officers who hold their ground, who don't chase headlines, and who quietly do their job with dignity.
Their silence is not absence. It is discipline in action!

Vikash Kumar
District Commandt. (Prob.)
68th Batch, Chest No. 010

A Festival of Colours, a Duty of Honour: My Holi Deputation in Gaya

As Holi approached — a time of colour, joy, and celebration across Bihar — we, the probationers at the Bihar Police Academy, were preparing not for festivities, but for field deputation. This year, I was assigned to Gaya district — a place known both for its spiritual legacy and the complexities it presents during large public celebrations.

I was attached to the SDPO Bodhgaya and worked under the overall supervision of the SSP, Gaya. The experience turned out to be one of the most enriching phases of my probation so far.

Learning from Experience and Leadership:

From the moment I reported, the district police machinery was already active — holding coordination meetings, reviewing intelligence inputs, and chalking out area-wise deployment plans. I had the opportunity to observe the functioning of an experienced and well-coordinated leadership team.

he SSP, Gaya, under whose guidance the entire district operation was being led, stood out for his composed yet commanding presence. He was not just deeply experienced but also remarkably approachable.

His clarity of thought, his anticipation of ground-level issues, and his emphasis on community-oriented policing left a lasting impression on me. Watching him interact with junior officers, calm down tense situations, and plan ahead with surgical precision was a masterclass in leadership.

On Ground with the SDPO Bodhgaya:

Attached with the SDPO Bodhgaya, I accompanied the team during flag marches, market inspections, and coordination meetings with local stakeholders. From checking sensitive points for potential conflicts to supervising security arrangements around Holika Dahan sites, every task gave me deeper insight into the complexities of field policing. Bodhgaya, with its international presence and local traditions, required both sensitivity and alertness. The SDPO's experience and people skills proved invaluable — I was encouraged to observe, engage, and understand how diplomacy and firmness work hand in hand.

Holika Dahan – Duty in the Flicker of Flames:

The evening of Holika Dahan was a crucial moment. Crowds were swelling, music was playing, and bonfires were being prepared. We ensured that all fire safety measures were in place, monitored crowd movement, and kept lines of communication open. Standing beside my seniors and fellow officers, I felt the quiet pride of being a part of something larger — a silent shield for the celebration to happen without fear.

Thanks to meticulous planning and the public's cooperation, the night passed peacefully across the district.

The Day of Holi – Colours of Vigilance

On Holi morning, our teams began early. We patrolled sensitive localities, interacted with communities, and ensured that the revelry did not cross into unruliness. What struck me most was how warmly many people responded to our presence — acknowledging our role with gratitude. It reminded me that the true strength of the police lies not in force but in presence and intent.

Reflections:

This deputation gave me lessons that no classroom could have taught. I learnt the value of preparation, leadership under pressure, team coordination, and above all, humane policing. I saw how the uniform can become a symbol of trust — when worn with integrity, empathy, and discipline.

The cooperation and mentorship from the SSP sir and the SDPO Bodhgaya were instrumental in shaping my understanding of ground policing. Their support, guidance, and willingness to teach a young probationer like me made all the difference.

As I returned to Rajgir after the assignment, I carried with me not just memories of a peaceful Holi, but also a deep sense of pride —

in the service I have chosen, the badge I wear, and the seniors I'm learning from.

- Saurav
DySP (Probationer)
68th Batch, Chest No. 007

One Day Workshop on NDPS Act, 1985

Not long ago, under the grand dome of **Bapu Sabhagaar** in Patna, we sat listening intently as senior officers, legal experts, and ground-level investigators took the podium to talk about one of the most pressing issues of modern India — **drug trafficking and substance abuse**. They weren't just teaching the NDPS Act; they were giving us a glimpse into the harsh reality officers face every day.

The Narcotic Drugs and Psychotropic Substances (NDPS) Act, 1985, is the **central law** that governs the control and regulation of operations relating to narcotic drugs and psychotropic substances. It bans the cultivation, production, manufacture, possession, sale, purchase, transport, and consumption of narcotic drugs and psychotropic substances, except for medical and scientific purposes.

The Ground Reality

During the session, an officer shared a chilling example from **Manipur**, where **drug cartels** operate dangerously close to civilian populations. In another case from Punjab, a police constable confessed how difficult it was to raid a high-profile location where the accused had political connections. What made these stories real wasn't just the crime — it was the **moral dilemma**, the community pressure, and the deep scars drugs leave behind in families.

One trainer pointed to **Bihar's rising vulnerability**, especially with new synthetic drugs like MDMA and LSD making their way through parcels, courier services, and even drones across borders.

What the Law Says :

The NDPS Act is **strict**. Possession of even a small quantity can result in imprisonment for up to one year or a fine up to ₹10,000 or both. For commercial quantities, rigorous **imprisonment of 10 to 20 years** and a fine up to ₹**2 lakhs** can be imposed.

But as we were rightly told:

"Law is only as effective as the person enforcing it."

That's why the session emphasized investigation procedures: importance of proper search and seizure, handling informers, and coordination with **NCB (Narcotics Control Bureau**) and international agencies.

The Human Cost:

Data from the National Crime Records Bureau (NCRB) 2022 shows over **75,000 cases** registered under NDPS across India. But behind each number is a face. In Patna itself, a 17-year-old was recently rescued during a raid — he had started with gutkha and moved to injectable heroin within a year.

One of the speakers, a rehab counselor, shared how **children as young as 12** are being used as **carriers**, unaware of what they are transporting. "They are victims, not just criminals," she said. That sentiment echoed through the hall.

Bihar's Response and Our Role

The Bihar police and excise department have started *de-addiction awareness* drives in schools, railway stations, and hostels. There is now a greater push toward rehabilitation, not just punishment. At the Academy, we were reminded that an officer's job is not just to arrest — it's also to understand, guide, and sometimes save.

The NDPS Act is a powerful tool, but its strength lies in ethical enforcement and community partnership. As future officers, we were made to reflect on what it means to act not just by the book, but with **empathy.**

Noorul Haque
DySP (Prob.)
68th Batch
Chest No. 009

सामुदायिक पुलिसिंग: वर्दी से परे, विश्वास की स्थापना

समकालीन समाज में पुलिस व्यवस्था की भूमिका केवल कानून-व्यवस्था बनाए रखने तक सीमित नहीं रही है। नागरिकों की अपेक्षाएँ और पुलिस से विश्वास का स्तर अब उस परंपरागत दृष्टिकोण से कहीं अधिक व्यापक और सहभागितापूर्ण हो चुका है। इसी परिवर्तनशील सोच से उपजा है एक **समावेशी मॉडल** — सामुदायिक पुलिसिंग, जो न केवल अपराध नियंत्रण का साधन है, बल्कि समाज में **विश्वास**, **संवाद** और **सहभागिता** की नई नींव रखता है।

सामुदायिक पुलिसिंग का आशय

सामुदायिक पुलिसिंग एक ऐसी अवधारणा है जिसमें पुलिस बल और स्थानीय समुदाय परस्पर सहयोग से सार्वजनिक सुरक्षा, अपराध की रोकथाम और सामाजिक सुधार की दिशा में कार्य करते हैं। यह मॉडल पारंपरिक 'आदेश और नियंत्रण' प्रणाली से हटकर '**साझेदारी और भागीदारी**' की ओर अग्रसर होता है। इसमें नागरिकों को केवल अपराध की सूचना देने वाला नहीं, बल्कि सुरक्षा प्रक्रिया का सक्रिय भागीदार माना जाता है।

जन-विश्वास की पुनर्स्थापना

समुदाय में पुलिस के प्रति भरोसे का अभाव, सूचनाओं के प्रवाह को अवरुद्ध कर देता है। सामुदायिक पुलिसिंग इसी अविश्वास की खाई को पाटने का कार्य करती है। जब पुलिस अधिकारी स्थानीय नागरिकों से नियमित संवाद स्थापित करते हैं, उनकी समस्याओं को **संवेदनशीलता** से सुनते हैं, और उनके समाधान में सक्रिय भूमिका निभाते हैं, तब समाज में विश्वास पुनः स्थापित होता है। यह विश्वास आगे चलकर अपराध रोकथाम में सहायक सिद्ध होता है।

सामाजिक भागीदारी और अपराध नियंत्रण

स्थानीय लोगों की सक्रिय भागीदारी से पुलिस को न केवल समय पर सूचनाएँ प्राप्त होती हैं, बल्कि आपराधिक गतिविधियों के सामाजिक कारणों को भी समझने में मदद मिलती है। उदाहरणस्वरूप, किसी मोहल्ले में नशाखोरी की प्रवृत्ति को केवल दंडात्मक उपायों से नहीं, बल्कि जागरूकता अभियान, परिवारों की काउंसलिंग और युवाओं के लिए वैकल्पिक गतिविधियों के माध्यम से नियंत्रित किया जा सकता है। सामुदायिक पुलिसिंग इन सभी उपायों का समन्वय करती है।

युवाओं और छात्रों से जुड़ाव

युवा वर्ग किसी भी समाज का भविष्य होता है। सामुदायिक पुलिसिंग युवाओं के बीच सकारात्मक संवाद स्थापित करने का भी माध्यम है। शैक्षणिक संस्थानों में पुलिस अधिकारियों द्वारा आयोजित संवाद सत्र, कैरियर मार्गदर्शन कार्यशालाएँ, या नशा मुक्ति अभियान जैसे कार्यक्रम, युवाओं में पुलिस के प्रति सम्मान और विश्वास उत्पन्न करते हैं। इससे न केवल युवाओं का मार्गदर्शन होता है, बल्कि पुलिस बल को एक सहायक समाजिक संस्था के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

महिला और बाल सुरक्षा में भूमिका

महिला एवं बाल सुरक्षा, सामुदायिक पुलिसिंग का एक प्रमुख आयाम है। महिला बीट अधिकारी, स्कूल सुरक्षा अधिकारी और **विशेष हेल्पलाइन** के माध्यम से यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि महिलाएँ और बच्चे निर्भय होकर अपने अधिकारों के लिए आगे आ सकें। पुलिस जब संवेदनशील और सक्रिय भूमिका निभाती है, तो पीड़ित व्यक्ति न्याय प्रणाली से जुड़ने में झिझकता नहीं है।

चुनौतियाँ और समाधान

इस प्रणाली की सफलता में कई बाधाएँ भी आती हैं। जैसे – पुलिस बल में जनशक्ति की कमी, संसाधनों की सीमाएं, पारंपरिक मानसिकता में परिवर्तन की धीमी गति, और कभी-कभी समुदाय का उदासीन रवैया। किन्तु इन चुनौतियों से निपटने हेतु समयबद्ध **प्रशिक्षण**, **तकनीकी सक्षमता**, और **जनसंपर्क** अभियानों का सहारा लिया जा सकता है। प्रत्येक पुलिस अधिकारी को संवेदनशीलता, सहानुभूति और नेतृत्व के गुणों से युक्त करना आज की आवश्यकता है।

सफलता की प्रेरणादायक पहलें

बिहार के कई जिलों में सामुदायिक पुलिसिंग के सकारात्मक परिणाम देखे गए हैं। गया में **"पुलिस आपके द्वार"** कार्यक्रम के माध्यम से पुलिस अधिकारियों ने गांवों में जाकर नागरिकों से संवाद किया, जिससे अपराध में गिरावट दर्ज की गई। दरभंगा में युवाओं के लिए खेल प्रतियोगिताएँ और कैरियर मार्गदर्शन शिविर आयोजित किए गए, जिनका सामाजिक प्रभाव उल्लेखनीय रहा।

भविष्य की दिशा

वर्तमान समय में डिजिटल माध्यमों का प्रयोग सामुदायिक पुलिसिंग को और अधिक प्रभावशाली बना सकता है। व्हाट्सएप बीट ग्रुप, नागरिक फीडबैक ऐप्स, और **सोशल मीडिया संवाद** जैसे प्लेटफार्म पुलिस को नागरिकों से जोड़ने में सक्षम बनाते हैं। इसके अतिरिक्त, अपराध की प्रवृत्तियों को समझने के लिए डेटा एनालिटिक्स जैसे तकनीकी उपकरणों का भी उपयोग किया जाना चाहिए।

अब समय है कि हर पुलिस अधिकारी वर्दी के साथ-साथ विश्वास भी धारण करे — ताकि समाज में न केवल कानून व्यवस्था, बल्कि न्यायपूर्ण सामाजिक संबंधों की स्थापना भी हो सके।

कोमल मेहता
परि० पुलिस उपाधीक्षक
68th batch
Chest No. 003

Few Snaps:

Few Snaps from the Cultural Night:

* Photos by Vikash Kumar Distt.Comdt.(P)(68th Batch)

* Magazine Designed by Saurav, DySP (P) (68th Batch)